फ़िलेमोन

पौलुस का फ़िलेमोन को लिखा गया पत्र

लेखकः

पौलुस, जो कि यीशु मसीह द्वारा भेजा गया था।

समयः

लगभग 60 ए.डी. में

विषयः

यीशु के सुसमाचार को दूसरों तक पहुँचाने के कारण पौलुस जेल में था। वहीं से उसने यह पत्र लिखा था। फ़िलेमोन के पास उनेसिमुस नाम का एक गुलाम था। वह फ़िलेमोन के पास से भाग गया था और वहीं जेल में था, जहाँ पौलुस था। पौलुस ने उसे उपदेश सुनाया और उसने यीशु को अपना लिया। पौलुस फ़िलेमोन से विनती करता है कि वह उसे स्वीकार करे। शब्द उनेसिमुस का अर्थ है 'फ़ायदेमन्द'। बीते दिनों में शायद वह फ़िलेमोन के लिए मददगार साबित नहीं हुआ था। लेकिन अब जब कि इसका जीवन बदल गया था, वह सभी-फ़िलेमोन, पौलुस और सब से अधिक यीशु के लिए सहायक था। जो लोग अपने जीवन में यीशु के सुसमाचार को जगह देते हैं, उनके जीवन में ऐसा होता है। इस से निकम्मे लोग उपयोगी बन जाते हैं। इस पत्र में विशेष शिक्षा यह है कि परमेश्वर के बेटे-बेटी समाज में कितने ही छोटे या नीचे क्यों न समझे जाते हों, हमारा प्यार उनके लिए बिना पक्षपात का होना चाहिए।

1पौलुस, जो यीशु मसीह के लिये कैदी
है और हमारे भाई तीमुथियुस की तरफ़ से
हमारे प्रिय भाई और सहकर्मी फ़िलेमोन,
2और हमारे प्रिय अफ़िया और अर्खिप्पुस
और संगी फ़ौजी और तुम्हारे घर के चर्च को,
3स्वर्गिक पिता परमेश्वर और हमारे
स्वामी यीशु मसीह की ओर से कृपा और
शान्ति मिले।
4अपनी प्रार्थनाओं में तुम्हें याद करते
समय मैं हमेशा परमेश्वर के प्रति आभार
प्रगट करता हूँ 5मैं तुम्हारे उस प्रेम और
विश्वास के बारे में सुनता हूँ, जो तुम
यीशु और सभी मुक्ति पाए लोगों से रखते
हो। 6मसीह यीशु के साथ तुम्हारे रिश्ते
के कारण हर अच्छी बात जो तुम में है
उसको जानने के फलस्वरूप दूसरों के साथ
अपने विश्वास को बाँटना असरदार हो,
7क्योंकि हे भाई, मुझे तुम्हारे प्रेम से बहुत
खुशी मिली और सुकून भी, इसलिए कि
मसीही लोगों के मन तरोताज़ा हो गए हैं।
8इसलिए हालांकि मुझे मसीह इस बात की
हिम्मत है कि जो कुछ ठीक है, उसकी आज्ञा
दूँ, 9फिर भी प्रेम की खातिर मुझ बूढ़े पौलुस
को जो अब मसीह यीशु के लिए कैदी है, यह
और भी ठीक जान पड़ा कि प्रेम से बिनती
करूँ। 10मैं अपने बेटे उनेसिमुस, जिस के
लिए मैं जेल ही में पिता बना, अपील करता
हूँ। 11पहले वह तुम्हारे किसी काम का नहीं
था लेकिन अब मेरे और तुम्हारे काम का है।
12मैंने उसे वापस तुम्हारे पास भेजा है,
इसलिए उसे मेरे दिल की तरह अपना लो।
13मैं चाहता तो था कि उसे अपने काम
के लिये अपने पास रखूँ ताकि खुशी की
खबर सुनाने में तुम्हारी जगह वह मेरी मदद

1:1 "कैदी"- इफ़ि. 3:1; 4:1; 2 तीमु. 1:4.
"तिमोथी"- फ़िलि. 1:1; प्रे.काम 16:1-3.
"फ़िलेमोन"- बाईबल में मात्र यही एक जगह है जहाँ यह नाम आया है।
1:2 "अफ़िया"- हमें नहीं मालूम की वह कौन थी।
"अर्खिप्पुस"- कुल. 4:17.
"फ़ौजी"- 2 तीमु. 2:2; 4:7.
"घर"- रोमि. 16:5; 1 कुरि. 16:19; कुल. 4:15.
1:3 रोमि. 1:7.
1:4-5 रोमि. 1:8; 1 कुरि. 1:4; इफ़ि. 1:15-16; फ़िलि. 1:3.
1:6 "मसीह में"- रोमि. 6:3-8; इफ़ि. 1:1,4.
"जानने की"- यह जानना कि मसीह पर भरोसा करने की वजह से हमारा क्या है और उसे दूसरों को बतलाना, दोनों ही एक दूसरे से जुड़े हुए हैं। जितना हम जानते जाते हैं कि यीशु में हमारा क्या है, उतना ही ज़्यादा हम दूसरों को बतला सकते हैं और कोमलता का बर्ताव कर सकते हैं।
1:7 "मसीही लोग"- रोमि. 1:7.
"तरोताज़ा"- पद 25; रोमि. 15:32; 1 कुरि. 16:18; 2 कुरि. 7:13; 2 तीमु. 1:16 प्यार भरी सहभागिता, सहृदयता और कोमलता से यही होता है।
1:8-9 एक सेवक होने के नाते, पौलुस फ़िलेमोन के सामने एक विश्वासी की ज़िम्मेदारियों को रख सकता था। लेकिन फ़िलेमोन ने दिखा दिया था कि, उसके मन में प्यार है (पद 7) इसलिए पौलुस इसी प्रेम के आधार पर बिनती करता है।
1:9 "मुझ बूढ़े"- उस समय शायद पौलुस 60 साल का था। तुलना करें प्रे.काम 7:58.
1:10 "बेटे"- इसका अर्थ है आत्मिक बेटा। तुलना करें 1 तीमु. 1:2 से। पौलुस की शिक्षा पाकर उनेसिमुस ने नया जन्म पाया था (यूहन्ना 12,13)। जेल में भी पौलुस यीशु के बारे में बताने से रूका नहीं
1:11 उनेसिमुस का मतलब है "फ़ायदेमंद" वह फ़िलेमोन का गुलाम था (पद 16) जो भाग गया था और उसके किसी काम का नहीं रहा था। लेकिन अब परमेश्वर की संतान बनने की वजह से कहीं ज्यादा फ़ायदेमंद बन गया था।
1:12 "मेरे दिल"- महान पौलुस के पास ऐसा बड़ा प्यार एक ऐसे इन्सान के लिए था, जिसे समाज में बहुत नीचा समझा जाता था। यीशु का प्रेम भी किसी के जीवन में यह कर सकता है जो उसे ग्रहण करेगा।
1:13-14 पौलुस को अच्छी तरह मालूम था कि यदि उसी के साथ पौलुस होता तो बहुत अच्छा होता। लेकिन बिना मालिक की अनुमति के वह किसी के नौकर को इस्तेमाल नहीं करना चाहता था। यदि कोई कुछ भलाई इसलिए करता है क्योंकि उस पर दबाव डाला जाता है तो ऐसी भलाई किसी काम की नहीं। यही बात किसी भी भेंट या इनाम के बारे में सच है अगर वह दबाव की वजह से दी जाती है। 2 कुरि. 8:7.

करे, 14लेकिन बगैर तुम्हारी सलाह लिए
मैं कुछ नहीं करना चाहता, ताकि तुम्हारा
अच्छा काम ज़ोर ज़बरदस्ती (दबाव)
से न हो लेकिन तुम्हारी अपनी इच्छा से
हो 15शायद इसीलिए उसने तुम्हें थोड़े
समय के लिए छोड़ा, जिससे कि तुम उसे
हमेशा-हमेशा के लिए अपनाओ 16अभी
एक गुलाम की तरह नहीं, लेकिन सेवक
से ऊपर एक भाई की तरह, और खासकर
मेरे लिए। लेकिन तुम्हारे लिए तो वह इस
से बढ़कर होना चाहिए।

17इसलिए यदि तुम मुझे अपना साथीदार
मानते हो, तो उसे इस तरह अपना लो, जैसे
मुझे अपनाते हो 18यदि उसने तुम्हारा कुछ
नुकसान किया है या उस पर कुछ कर्ज़
है, उसे मेरे नाम पर लिख लो 19मैं पौलुस
अपने हाथों से यह लिख रहा हूँ कि मैं सब
वापस लौटा दूँगा। मुझे तुम को यह बताने
की ज़रूरत नहीं कि मेरा कर्ज़ जो तुम पर
है, वह तुम ही हो। 20हाँ, भाई तुम्हारे लिए
मैं मसीह में खुश हूँ। प्रभु में मेरे मन को
तरोताज़ा कर दो 21तुम्हारी आज्ञाकारिता
पर मुझे भरोसा है, इसलिए मैं तुम्हें लिखता
हूँ, यह जानते हुए कि मैं जो कुछ कहता
हूँ, उससे ज़्यादा तुम करोगे।

22मेरे लिए ठहरने की जगह तैयार करो,
क्योंकि मुझे भरोसा है कि तुम्हारी प्रार्थनाओं
के द्वारा मैं तुम्हें दे दिया जाऊँगा।

23मसीह यीशु में मेरा कैदी दोस्त इपफ्रास
तुम्हें सलाम कहता है। 24मेरे साथी मारकस,
अरिस्तर्खुस, देमास और लूकस का भी
सलाम

25मसीह यीशु की कृपा तुम्हारी आत्मा
के साथ हो।

1:15-16 "गुलाम"- इफ़ि. 6:5; निर्ग. 21:2.

1:16 "भाई की तरह"- कुल. 4:9 मसीह में मालिक और नौकर (या गुलाम) अमीर-गरीब, शिक्षित-अशिक्षित, ऊँची या नीची जाति के समझे जाने वाले, सभी एक हैं और भाई-बहन हैं। कुल. 3:11; गल. 3:28; 1 कुरि. 12:12-13 जो मसीही इस बात को स्वीकार नहीं करता वह परमेश्वर द्वारा दी गयी एक बड़ी बात को ठुकराता है। छोटे या कम समझे जाने वाले लोगों के ऊपर अपने आपको रखना, समझना या दिखाना परमेश्वर की निगाह में घिनौना है।

1:17-19 यह पौलुस ने मसीह से सीखा था। वह जानता था कि जिस तरह से परमेश्वर ने यीशु को स्वीकार किया था, वैसे ही वह विश्वासियों को भी करते हैं - प्रे.काम 15:8; रोमि. 5:2; 14:3; इफ़ि. 2:18 उसे मालूम था कि जिस तरह से यीशु ने हमें अपनाया है, हम भी एक दूसरे को अपनाएँ - रोमि. 15:7 वह जानता था कि किसी व्यक्ति को स्वीकार करने का मतलब है, उसके भेजने वाले को स्वीकार करना - यूहन्ना 13:20 उसे मालूम था कि यीशु पर ईमान लाने वालों के सब गुनाह, गलतियाँ और आत्मिक कर्ज़ मसीह के खाते में है। यीशु ने सब कुछ चुकता भी कर दिया है - यशा. 53:5-6; रोमि. 8:33-34; 2 कुरि. 5:19-21 पौलुस को मालूम था कि प्रेम है क्या। सभी को अपने जीवन में लागू करने के लिए भी वह तैयार था। हमें भी पौलुस की तरह करना चाहिए। हमें तैयार रहना चाहिए कि जैसे मसीह ने हमें माफ़ किया है, हम भी दूसरों को माफ़ करें। हम ने अपने सृजनहार को दुख दिया है और उन्हों ने हमें माफ़ किया है। इसी तरह हमें चाहिए कि हम भी दूसरों को माफ़ करें।

"तुम मुझे"- शायद पौलुस कहना चाहता था कि उसके द्वारा फ़िलेमोन ने खुशी की खबर सुनी और विश्वास किया। इसलिए जिससे पौलुस प्रेम करता था उसको भी माफ़ किया जाना चाहिए था।

1:20 यह खुद उसके फ़ायदे के लिए नहीं था लेकिन उसके लिए जो उसको बहुत प्यारा था।

"तरोताज़ा"- पद 7

1:21 "आज्ञाकारिता"- किसी आज्ञा के प्रति नहीं क्योंकि पौलुस ने कोई दी ही नहीं थी (पद 8,9) लेकिन 'प्रेम' के सर्वश्रेष्ठ सिद्धान्त के प्रति आज्ञाकारिता। जो कुछ हम करते हैं, मसीह को खुश करने के लिए करना चाहिए और इसलिए क्योंकि दूसरों से प्रेम करते हैं।

1:22 फ़िलेमोन और दूसरों की बिनतियों की वजह से पौलुस जेल से रिहाई की कामना करता है (तुलना करें प्रे.काम 12:5-11)

1:23 "इपफ्रास"- कुल. 1:17; 4:12.

1:24 "मारकस"- मरकुस 2 तीमु. 4:11.

"अरिस्तर्खुस"- कुल. 4:10.

"देमास, लूका"- कुल. 4:14.

1:25 रोमि. 1:17; 16:20.